Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

भारतीय ग्रामीण सामाजिक संरचना

Surendra Narayan*

Research Scholar, Bundelkhand University, Jhansi

सार – ***मानव ने आदि काल से ही समाज में समानता पैदा करने एवं विभिन्नता को समाप्त करने का प्रयास किया है। समाजवादी समाज की स्थापना उसकी इसी कल्पना पर निर्भर है, किन्तु वास्तव में ऐसे समाज की स्थापना सम्भव नही, क्योंकि सामाजिक संरचना का निर्माण विभिन्न उच्च एवं निम्न प्रस्थितियों से होता है। इन उच्च तथा निम्न स्तरों के बीच सामाजिक जीवन में स्पष्ट असमानता दिखायी पड़ती है। समाज में उच्च और निम्न श्रेणियों के निर्माण उनके स्थान क्रम के निर्धारण, उनके मध्य सुविधा और शक्ति के बँटवारे में असमानता की पद्धति और प्रक्रिया को सामाजिक स्तरीकरण कहा जाता है।***

कुंजी शब्द - भारतीय, ग्रामीण, सामाजिक, संरचना, बदलते प्रतिमान

----------X----------

प्रस्तावना

भारतीय ग्रामीण सामाजिक संरचना

अध्ययन का सैद्धान्तिक निर्माण

प्राचीन काल से लेकर आज तक के मानव समाज के इतिहास में कोई ऐसा समय नहीं रहा जिसमें किसी भी एक समुदाय के सभी व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या राजनैतिक स्थिति समान रही हो। आज के ग्रामीण समुदाय में भी विभिन्न व्यक्तियों के बीच अनेक आधारों पर ऊँच नीच का एक स्पष्ट विभाजन देखने को मिलता है जिसे हम सामाजिक स्तरीकरण की संज्ञा दे सकते हैं।

सोरोकिन के अनुसार अस्तरीकृत समाज जिसके सदस्यों में वास्तविक समानता हो, केवल एक कल्पना है जो मानव इतिहास में कभी साकार नहीं हुई है।" सामाजिक स्तरीकरण समाज के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में विभिन्न सामाजिक स्तरों के मध्य संरचनात्मक असमानताओं की व्यवस्था है। सामाजिक स्तरों को सामाजिक अस्तीत्व, समाज के मूल्यों और नियमों के आधार पर ऊँची नीची श्रेणी में रखा जाता है।

कोई विशेष स्तर समाज के दूसरों की तुलना में ऊँचा या नीचा, विशेष सुविधा प्राप्त था ऐसी सुविधाओं से वंचित शासक या शासित हो सकता है। इस प्रकार सामाजिक स्तरीकरण समाज के विभिन्न स्तरों के बीच संगठित असमानता के क्रमबद्ध रूप में नियमित होने की स्थिति है। सामाजिक संरचना में सामाजिक स्तरीकरण का केन्द्रीय महत्व होते हुए भी इस पर समाज में होने वाले परिवर्तनों का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक गतिशीलता और क्रमिक सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया आन्तरिक एवं वाह्य कारकों के कारण कार्यशील रही है। भारतीय समाज के सांस्कृतिक क्षेत्र में गतिशीलता और परिवर्तन की प्रक्रिया संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण, धर्म परिवर्तन एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण के रूप में स्पष्ट होती है। सामाजिक संरचना के क्षेत्र में ये भूमिका विभेदीकरण, वैधानिकरण, प्रवास, राजनैतिक उन्नयन, अभिजन वर्ग का संचरण, प्रशासनतंत्रीकरण एवं औद्योगिकरण के रूप में स्पष्ट होती है। इन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप भारतीय ग्रामीण समुदायों में सामाजिक स्तरीकरण के प्रतिमानों में बदलाव आया है।

भारतीय ग्रामीण समाज में तुलनात्मक रूप से अभी तक नगर निकट गाँव, कस्वाई गॉव एवं नगर दूर गाँव के सन्दर्भ में सामाजिक स्तरीकरण के बदलते प्रतिमान के अध्ययनों का अभाव रहा है। अभी तक के कई समाजशास्त्रियों ने जैसे एम0 एन0 श्रीनिवासश् एस0 सी0 दूबे व जी0 एस0 धूरिये ने सामाजिक ग्रामीण संरचना में जाति को सामाजिक स्तरीकरण का एक मात्र कारक के रूप में विस्तृत रूप से क्रमबद्ध अध्ययन किया है। सामाजिक स्तरीकरण के स्वरूप की गहरी समझ उसी स्थिति में सम्भव है, जबकि स्तरीकरण

www.ignited.in

की विभिन्न प्रक्रियाओं एवं सिद्धान्तों तथा उनके प्रत्येक पहलूओं के आपसी सम्बन्धों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने का प्रयत्न किया जाय।

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय ग्रामीण समुदाय में सामाजिक स्तरीकरण के बदलते प्रतिमानों को जानने का प्रयत्न किया गया है। सामाजिक स्तरीकरण के बदलते हुए प्रतिमानों पर प्रकाश डालने हेतु यह आवश्यक है कि बदलते हुए सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक संरचना को उभरते हुए स्तरीकरण की व्यवस्था के साथ जोड़ा जाय। भारतीय ग्रामीण समुदाय में स्तरीकरण के परम्परागत प्रतिमान, वर्ग संरचना, स्तरीकरण के बदलते स्वरूप, सामाजिक गतिशीलता, स्तरीकरण में प्रस्थिति व्यवस्था एवं उभरती हुई शक्ति संरचना हमारे अध्ययन की प्रमुख समस्या है।

स्तरीकरण के सिद्धान्त एवं उपागम

सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन के बहुत से सैद्धान्तिक उपागम हैं, लेकिन समग्र रूप में सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन सम्बन्धी सिद्धान्तों को निम्नलिखित दो भागों में विभक्त किया जा सकता है।

प्रथम प्रकार्यवादी उपागम।

द्वितीय - द्वन्द्वात्मक या माक्र्सवादी उपागम।

प्रकार्यवादी उपागम सामाजिक स्तरीकरण के प्रकार्यात्मक उपागम के अनुसार सामाजिक स्तरीकरण समाज का एक व्यवहारिक और सकारात्मक पक्ष है। इससे समाज में सौहार्द और एकता स्थापित होती है इसके माध्यम से समाज के सदस्यों को उसकी योग्यता और जरूरत के अनुसार काम मिलता है और समाज की आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होती रहती है। इस दृष्टिकोण के प्रमुख अधिवक्ता किंग्सले डेविस और विल्वर्ट व टॉलकाट पारसन्स हैं। सामाजिक स्तरीकरण के प्रकार्यात्मक सिद्धान्त के समर्थकों में "डेविस और मूर" प्रमुख हैं। इन्होने लिखा है "सामाजिक विषमता अचेतन रूप से विकसित एक ऐसी युक्ति है जिसके द्वारा समाज यह सुनिश्चित करता है कि जो सबसे महत्वपूर्ण पद हैं वे सबसे योग्य व्यक्तियों द्वारा ही भरा जाय।"

डेविस और मूर के अनुसार सामाजिक स्तरीकरण एक ऐसी युक्ति है, जिसके द्वारा सबसे अधिक प्रतिभावान व्यक्तियों को सबसे महत्वपूर्ण पद सौंपे जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि विभिन्न पदों पर बिना भेद-भाव के नियुक्तियाँ सम्भव नहीं है, समाज के कुछ पदों के लिए विशेष प्रतिभावान, निपुण एवं परिश्रमी, कुशाग्र बुद्धि वाले व्यक्तियों की जरूरत होती है।

इन पदों को उन व्यक्तियों द्वारा भरा जा सकता है जो दूसरों की तुलना में अधिक प्रतिभावान व योग्य होते हैं। कुछ पद ऐसे भी होते हैं, जिनमें विशेष बुद्धि की आवश्यकता होती है और जिनसे सम्बन्धित कार्य प्रत्येक व्यक्ति नहीं कर सकता ऐसे पदों के महत्व और उसे प्राप्त करने की लालसा को देखते हुए ऐसा तरीका अपनाना पड़ता है जिससे तार्किक आधार पर कार्यों को उनके महत्व के अनुसार ऑका जा सके। ऐसे कार्यों के प्रति व्यक्तियों को प्रेरित करने के लिए समाज द्वारा पुरस्कार की व्यवस्था होती है।

प्रत्येक समाज की सामाजिक परिस्थितियाँ भिन्न-भिन्न होती हैं। समाज के सही संचालन के लिए कार्यों का ऐसा विभाजन होना चाहिए कि कार्य अपनी पूर्ण क्षमता के साथ सम्पन्न हो सके और लोगों में सामंजस्य भी बना रहे। सभी कार्य समान कार्यात्मक नहीं होते और न ही उन्हें सम्पादित करने के लिए समान दक्षता व योग्यता की आवश्यकता होती है। इस प्रकार कार्यो का बॅटवारा सामाजिक व्यवस्था का अंग होते हुए स्तरीकरण के निर्धारण में सहायक सिद्ध होता है।

सामाजिक असमानता एक अनिवार्य घटना है और सामाजिक स्तरीकरण

सामाजिक पदों को अपने आप पद सोपानात्मक विभिन्नता का परिणाम है। पुरस्कार किसी पद की प्रकार्यात्मक महत्व की उपज है साथ ही साथ सुयोग्य व्यक्तियों के सापेक्ष समाज का भी प्रतिफलन है।

विभिन्न समाजशास्त्रियों ने प्रकार्यवादी सिद्धान्त की आलोचना भी की है, रांगश् ने प्रकार्यात्मक सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि प्रकार्यात्मक सिद्धान्त बहुत ही सामान्य है। इसके अन्तर्गत एक मूर्त समाज में असमानता का क्या क्षेत्र होता है तथा पद के क्या निर्धारक होते हैं, यह कहीं स्पष्ट नहीं किया गया है। अमेरिकन समाजशास्त्रियों ने असमानता की अवधारणा को नगण्य कर दिया है।

एण्डर्सन ने इस सिद्धान्त की आलोचना करते हुए कहा है कि यदि हम यह मान भी लें कि महत्वपूर्ण पद सोपानात्मकता को किसी प्रकार निष्पक्ष रूप से स्थापित भी किया जा सके, तो भी इस कथन की पुष्टि हेतु ठोस प्रमाण कहां है कि अधिक महत्वपूर्ण पदों में विषम

www.ignited.in

पुरस्कारों का निर्माण किया जाना चाहिए, ताकि उन्हें भरा जा सके। इस विषय में स्पष्ट मार्गदर्शन नहीं दिया गया कि कितना विषम पुरस्कार होना चाहिए। इस बात का तथ्य यह है कि यह सिद्धान्त समाज में यथास्थिति वाद का पोषक है, इस सिद्धान्त में सामाजिक विषमता की व्यवस्था की बात की गयी है। ट्यूमिनश् का कहना है कि प्रकार्यात्मक महत्व का विचार अपर्याप्त है, जिसमें मूल्यों का विभेदीकरण भी सम्मिलित है, जिसकी कि यह कथित रूप से व्याख्या करता है।

संघर्षात्मक सिद्धान्त

सामाजिक स्तरीकरण के प्रकार्यात्मक सिद्धान्त के विरोध में संघर्षात्मक सिद्धान्त का उद्भव हुआ। स्तरीकरण के द्वन्द्ववादी विचारक सामाजिक संघर्ष को महत्वपूर्ण सामाजिक प्रक्रिया मानते हैं और समाज की अखण्डता में विश्वास नहीं करते हैं। उनके सामाजिक संस्थाओं के बीच अन्तर्सम्बन्ध नहीं के बराबर है, उनके अनुसार अभिजात वर्गों को सम्पत्ति, शक्ति और सम्मान का विशेषाधिकार प्राप्त होने के कारण समाज के अन्य सदस्य जीवन के सुख का उपभोग नहीं कर पाते, फलतः वे मानते हैं कि सामाजिक स्तरीकरण सामाजिक संघर्ष का स्रोत है।

स्तरीकरण का प्रकार्यात्मक सिद्धान्त समाज के सदस्यों के आम उद्देश्यों पर जोर डालते हैं जबकि संघर्षात्मक सिद्धान्तकार उन आधारभूत तथ्यों पर प्रकाश डालता है, जिनके कारण समाज धनी व निर्धन लोगों के बीच विभाजित हो जाता है। प्रकार्यात्मक सिद्धान्तकार सामाजिक सम्बन्धों से उत्पन्न आम फायदों पर जोर डालते हैं, संघर्षात्मक सिद्धान्तकार सर्वहारा पर बुजुर्वा वर्ग के आधिपत्य पर प्रकाश डालते हैं। इसके अलावा, जहाँ प्रकार्यात्मक सिद्धान्तकार सर्वसम्मति व अमन को सामाजिक एकता का आधार मानते हैं वही संघर्षात्मक सिद्धान्तकार अमीरों द्वारा गरीबों के दमन को सामाजिक असमानता का आधार मानते हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी द्वन्द्ववादी विचारक प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण की वैधता को पूर्णतः अस्वीकार करते हैं।

इसी प्रकार कुछ प्रकार्यात्मक सिद्धान्तकार मानव समाज में संघर्ष के महत्व को भी स्वीकार करते हैं। वस्तुतः एकता के उदय में संघर्ष की भूमिका बतौर पृष्ठभूमि है और इसी प्रकार "एकता" को संघर्ष के आधार के रूप में देखा जाता है। जिसमें एक प्रकार का निरन्तर्य और अन्तर्विरोध होता है।

कार्ल मार्क्स सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन में द्वन्द्वात्मक उमागम के प्रमुख प्रणेता हैं, मार्क्स आर्थिक असमानता को संघर्ष का आधार मानते हैं, अन्य द्वन्द्ववादी विचारक "शक्ति" व असमानता को समाजिक संघर्ष का मूल कारण मानते हैं। "मार्कर्स व एंगिल्स" ने कम्यूनिस्ट मैनिफेस्टो में लिखा है "आज तक अस्तित्व में रहे समाजों का इतिहास वर्ग संघर्ष का इतिहास है।" मार्क्स सामाजिक विकास के कई चरणों की ओर इशारा करते हैं। जैसे प्राचीन सभ्यता, सामंतवाद व पूँजीवाद।

उनका मानना है कि सामाजिक विकास के प्रत्येक चरण में दो प्रतिद्वन्द्वी वर्गों का सह अस्तित्व होता है। मार्क्स के अनुसार इन वर्गों के बीच संघर्ष के परिणामस्वरूप सामाजिक परिवर्तन होता है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. स्तरीकरण के सिद्धान्त एवं उपागम का अध्ययन
2. सामाजिक असमानता एक अनिवार्य घटना है और सामाजिक स्तरीकरण का अध्ययन

साहित्य की समीक्षा

डेविस और मूर के अनुसार सामाजिक स्तरीकरण एक ऐसी युक्ति है, जिसके द्वारा सबसे अधिक प्रतिभावान व्यक्तियों को सबसे महत्वपूर्ण पद सौंपे जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि विभिन्न पदों पर बिना भेद-भाव के नियुक्तियाँ सम्भव नहीं है, समाज के कुछ पदों के लिए विशेष प्रतिभावान, निपुण एवं परिश्रमी, कुशाग्र बुद्धि वाले व्यक्तियों की जरूरत होती है।

सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन मे मापन एवं अवधारणीकरण

किसी भी समस्या के व्यवास्थित विश्लेषण के लिए नियोजित अध्ययन तथा सर्वेक्षण प्रारूप आवश्यक है। ऐसी स्थिति में जबकि अध्ययन व्यवस्थित विश्लेषण एवं नियोजित सर्वेक्षण प्रारूप पर आधारित न हो तो समस्या का पर्याप्त व उचित ज्ञान सम्भव नहीं है। एक शोध विषय का चयन वैज्ञानिक तथ्यों द्वारा निर्धारित न भी हो लेकिन एक शोध समस्या के विषय का निर्माण वैज्ञानिक खोज का पहला चरण है और यह प्राथमिक रूप से वैज्ञानिक तरीकों की आवश्यकताओं द्वारा प्रभावित होना चाहिए।

सामाजिक स्तरीकरण के बदलते प्रतिमान के अध्ययन के लिए एक पद्धतिशास्त्र को विकसित करने के लिए कई तत्व आवश्यक होते हैं। साधारणतया परिवर्तन का अध्ययन उन

कारकों का अध्ययन है जो परितर्वन लाते हैं। इन कारकों की खोज करने के लिए एक शास्त्रिय शोध प्रविधि है प्रयोगीकरण, दूसरा एक चालू स्थिति का निरन्तर या क्रम कालिक अवलोकन। इन प्रविधियों के ऊपर कई विभिन्नताएँ हैं तथा इनके कई संयोजन भी हैं। बदलते हुए सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन को पुष्ट बनाने वाला महत्वपूर्ण तथ्य है वह है शोध प्रारूप।

कैसे कोई प्रयोग अथवा अवलोकन किया जाये ताकि परिवर्तन लाने वाले कारकों के बारे में मान्य निष्कर्ष निकाले जा सकें। दूसरे तत्व जो इसे पुष्ट करते हैं वे प्रायः विश्लेषणात्मक व अवधारणात्मक हैं। समाजशास्त्र में सामाजिक स्तरीकरण की अवधारणा एक विशिष्ट अवधारणा है, क्योंकि यह हमारे इन्द्रीय प्रभावों का तात्कालिक उपज नहीं है बल्कि बदलते हुए स्तरीकरण एक द्वैतीयक क्रम का आमूर्तिकरण है।

ट्यूमिन का पूछना है कि विभेदीकरण किस प्रकार अनिवार्य रूप से श्रेणीवद्धता की ओर अग्रसर होता है। वस्तुतः सामाजिक स्तरीकरण समाज को संगठित करने के बजाय तोड़ भी सकता है, आपका मानना है कि डेविस व मूर ने भौतिक सुख व सम्मान पर विशेष बल दिया है और शक्ति तथा प्राधिकार जो कि सामाजिक स्तरीकरण के मुख्य प्रणेता हैं को नजर अंदाज किया है।

अध्ययन के मापन व अवधारणीकरण में वैधता मापन की आखिरी समस्या को सम्भाव्य अवलोकन के संकुल में सैद्धान्तिक तत्वों को संग्रहण करने के कार्य

तक कम किया जा सकता है। सामाजिक स्तरीकरण एक तरफ विभिन्न सिद्धान्तों पर आधारित होता है। जिसे अभिव्यक्त करना उतना ही कठिन होता है जितना कि वृहद् सिद्धान्तों को तथा दूसरी तरफ उपयोगी और रूचिकर आकड़ों के पहाड़ पर निर्भर करना पड़ता है। जिसमें अवधारणीकरण तथा प्रविधि वैधता की समस्या से जूझते हैं।

स्तरीकरण के अध्ययन में सामान्य अवधारणा को विशिष्ट तथा शुद्ध घटक की आवश्यकता पड़ती है। हमारा यह कार्य होता है कि प्रस्थिति के उन घटकों को व्यक्ति के लिए परिणामों एवं प्रस्थिति के विभिन्न स्वरूपों के विकास के लिए सम्बन्धित करना। हमने स्तरीकरण के इकाइयों के अध्ययन की भूमिकाएँ, व्यक्ति, परिवार तथा समूह के रूप में लिया है। प्रस्थिति व्यवस्था का अर्थ है समूह के अन्तर्गत पद विन्यास का संकुल।

सोरोकिन के अनुसार "अस्तरीकृत समाज जिसके सदस्यों में वास्तविक समानता हो, केवल एक कल्पना है जो मानव इतिहास में कभी साकार नहीं हुई है।" सामाजिक स्तरीकरण समाज के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में विभिन्न सामाजिक स्तरों के मध्य संरचनात्मक असमानताओं की व्यवस्था है। सामाजिक स्तरों को सामाजिक अस्तीत्व, समाज के मूल्यों और नियमों के आधार पर ऊँची नीची श्रेणी में रखा जाता है।

प्रस्तुत अध्ययन का आधार अन्वेषणात्मक एवं वर्णनात्मक है। अन्वेषणात्मक शोध प्रारूप वर्तमान अध्ययन के लिए इसलिए भी लाभदायक है क्योंकि इससे ग्रामीण समुदाय में बदलती हुई स्तरीकरण के प्रकृति की विभिन्न पक्षों की व्याख्या होती है। अन्वेषणात्मक दृष्टिकोण से हमने व्यावसायिक गतिशीलता, विभिन्नता, शक्ति संरचना तथा वर्ग निर्माण पर नगरीकरण का प्रभाव ढूढ़ने का प्रयत्न किया है। साथ ही जातियों के बीच सम्बन्धों की प्रकृति को भी जानने का प्रयास किया है।

"टॉलकाट पारसन्स" सामाजिक स्तरीकरण को समाज के लिए वांछनीय व प्रकार्यात्मक मानते हैं। यह वांछनीय है, क्योंकि समाज के विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करने के लिए विभिन्न योग्यता व दक्षता वाले लोगों की आवश्यकता होती है। यह प्रकार्यात्मक है क्योंकि, यह समाज के विभिन्न समुदायों को जोड़ता है और उन्हें इस बात के लिए आश्वस्त करता है कि उन्हें उनकी योग्यता व कुशलता के अनुरूप काम मिला है। यह सभी बातें आधुनिक जटिल समाज की एकता और कुशल संचालन के लिए जरूरी हैं।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्ययन में हमने सामाजिक स्तरीकरण के बदलते प्रतिमानों का विश्लेषण भारतीय ग्रामीण समुदाय के सन्दर्भ में किया है। वर्तमान अध्ययन में भारतीय ग्रामीण समुदाय में सामाजिक स्तरीकरण के बदलते प्रतिमान पर प्रकाश डाला गया है, इसलिए आवश्यक है कि बदलते हुए भारतीय सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनैतिक एवं आर्थिक संरचना को उभरते हुए स्तरीकरण व्यवस्था के साथ जोड़ा जाय। भारतीय ग्रामीण समुदाय में स्तरीकरण के परम्परागत प्रतिमान वर्ग, संरचना, स्तरीकरण के बदलते स्वरूप, सामाजिक गतिशीलता एवं स्तरीकरण, प्रस्थिति व्यवस्था एवं उभरती हुई शक्ति संरचना के स्वरूप की जानकारी प्राप्त करना हमारे अध्ययन की प्रमुख समस्या है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सोरोकिन पी0ए0: सोशल मोबिलिटी, न्यू यार्क, 1927

2. श्री निवास, एम० एन०: सोशल चेन्ज इन माडर्न इण्डियां ब्रेक्ले यूनिवर्सिटि ऑफ कैलिफोर्निया प्रेस 1966.

3. दूबे, एस० सी०: रैन्किंग आफ काट्स इन तेलंगाना विलेज 1955

4. घूरिये, जी0एस0: कास्ट क्लास एण्ड आक्यूपेशन, बाम्बेः पापुलर बुक डिपो 1950

5. डेविस, किंग्सले एण्ड मूर. विल्वर्ट, "समप्रिसी पल्स ऑफ स्ट्रेटीफिकेशन अमेरिकन सोसियोलॉजीकल रिब्यू, 1945.

6. रांग, डेनिस० एच०: दी फन्कश ऑफ थ्योरी ऑफ स्ट्रेटीफी फेशन, सम नेग्लेक्टेड कंसीडरेशन, अमेरिका रिव्यू, दिसम्बर 1954

7. एण्डर्सन, सी0 एच0: पॉलिटिकल इकोनॉमी ऑफ सोशल क्लास, न्यू जर्से, पेंटिस-हाल,इंग्लेवुड, 1974

8. ट्यूमिन, एम०एम०: सोशल स्ट्रेटीफिकेशनः दी फार्स एण्ड फन्कशन ऑफ इण्डिया प्रा0 लि0 1981 .

9. पारसंस, टी0: एन एनालिटिकल एप्रोच टू दी थ्योरी ऑफ सोशल स्ट्रेटीफिकेशन-एसे इन सोसियोलॉजीकल थ्योरीज, ग्लेनीवोः दी फी प्रेस, 1954 पृ0 69 एण्ड रिवाइज्ड एनालिटिकल एप्रोच टू दी थ्योरी ऑफ सोशल स्ट्रेटीफिकेशन, पृ0 386-439

10. मार्क्स, कार्ल एण्ड एंगिल्स, एफ0: कम्यूनिस्ट मेनीफस्टो, न्यू यार्क डेल, 1963.

11. मार्क्स, कार्ल० एण्ड एंगिल्स, एफ0: कम्यूनिस्ट मेनीफस्टो, न्यू यार्क, डेल, 1963. 2. डेहरन डौर्फ, आर०: कास्ट एण्ड क्लास कान्फ्लिक्ट इन इण्डस्ट्रीयल सोसाइटी लंदन, रोटलेज एण्ड

12. केगन पॉल 1954, पृ0 10. सोसियोलॉजिकल एलेमेट्स ऑफ मार्क्स थ्योरी ऑफ सोसियोलाजीकल एलीमेट्स ऑफ मार्क्स थ्योरी ऑफ क्लास हैव वीन लेबोरेटरी डिसक्यूज्ड बाई डेहरेनडौर्फ, पृ0 1821

13. मिल्स, सी0, राइटः दी पावर इलीट, न्यू यार्क, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1956

14. लेस्की, जी0: पॉवर एण्ड प्रिविलेज, ए थ्योरी ऑफ सोशल स्ट्रेटीफिकेशन, न्यू यार्क मैक ग्रे हिल, 1966.

15. वेबर, मैक्स.: क्लास स्टेटस एण्ड पी आर्टी, जेर्थ, एच0 एच० एण्ड मिल्स, सी० उब्ल्यू (आदि) फाम मैक्स वेबर, एसेइन सोसियोलॉजी, लंदन, रोतलेज एण्ड केगन पॉल, 1947, पृ0 180-194

16. सी गार्थैड मिल्स (पृ0 46-50) फार ए लूसीड कम्पेरिजन मार्क्स एण्ड वेबर.

17. सेनार्ट, ई०: कास्ट इन इण्डियाः दी फैक्ट्स एण्ड दी सिस्टम, लन्दन, मेथेन, 1930 रिजले, एच० एच०: दी प्यूपील ऑफ इण्डिया, सेकेण्ड एडिशन, दिल्ली ओरिएण्ट बुक, 1969. केतकर, एस० वी०: दी हिस्ट्री ऑफ कास्ट इन इण्डिया, इथेका, नाईः कर्नेल, 1909.

18. वेबर, मैक्स.: क्लास स्टेटस एण्ड पी-आर्टी, जेर्थ, एच0 एच0 एण्ड मिल्स, सी0 उब्ल्यू (आदि) फाम मैक्स वेबर, एसेइन सोसियोलॉजी, लंदन, रोतलेज एण्ड केगन पॉल, 1947, पृ0 180-194

19. मार्क्स, कार्ल एण्ड एंगिल्स, एफ०: कम्यूनिस्ट मेनीफस्टो, न्यू यार्क डेल, 1963.

20. पारसंस, टी०: एन एनालिटिकल एप्रोच टू दी थ्योरी ऑफ सोशल स्ट्रेटीफिकेशनः अमेरिकन, जर्नल ऑफ सोसियोलॉजी, नवम्बर, 1940.

21. पालॅन्जास, एन0: स्टेट, पॉवर सोसिलिज्म, लंदन, न्यू लेफ्ट बुक्स, 1978.

Corresponding Author

Surendra Narayan*

Research Scholar, Bundelkhand University, Jhansi

sur709@gmail.com